कोरोना

छिन गई आजादी मेरी,
पेड़ो के कटने से,
टूट गया घरौंदा मेरा,
कंकरीटों के घरों के बनने से।

घूमती थी पहले मैं,
हर जगह, स्वछंद
आया जैसे ही कोरोना,
घूमना-फिरना हो गया बंद।

भूल गयी हूँ मैं,
खुली हवा में सांस लेना,
लगाने लगी हूँ मास्क,
जब से फैला है कोरोना।

हे प्रभु बता दे,
कोरोना का वेक्सीन,
कब तक आ जाएगा,
कब होठों पर मुस्कुराहट होगी,
क्या फिर से सब ठीक हो पाएगा।

क्या मैं विद्यालय जा पाऊँगी,
फिर से हाथ मिला पाऊँगी,
दोस्तों से मिल पाऊँगी,
फिर से सामान्य जिंदगी जी पाऊँगी।

याद रखना एक बात मेरी
दो गज दूरी आज है जरूरी
जीने की ख्वाहिश
तभी हो पाएगी पूरी।

धन्यवाद

रोहिणी कुमारी
आठ 'अ'